तान्या का पुनर्मिलन समारोह



तान्या का पुनर्मिलन समारोह

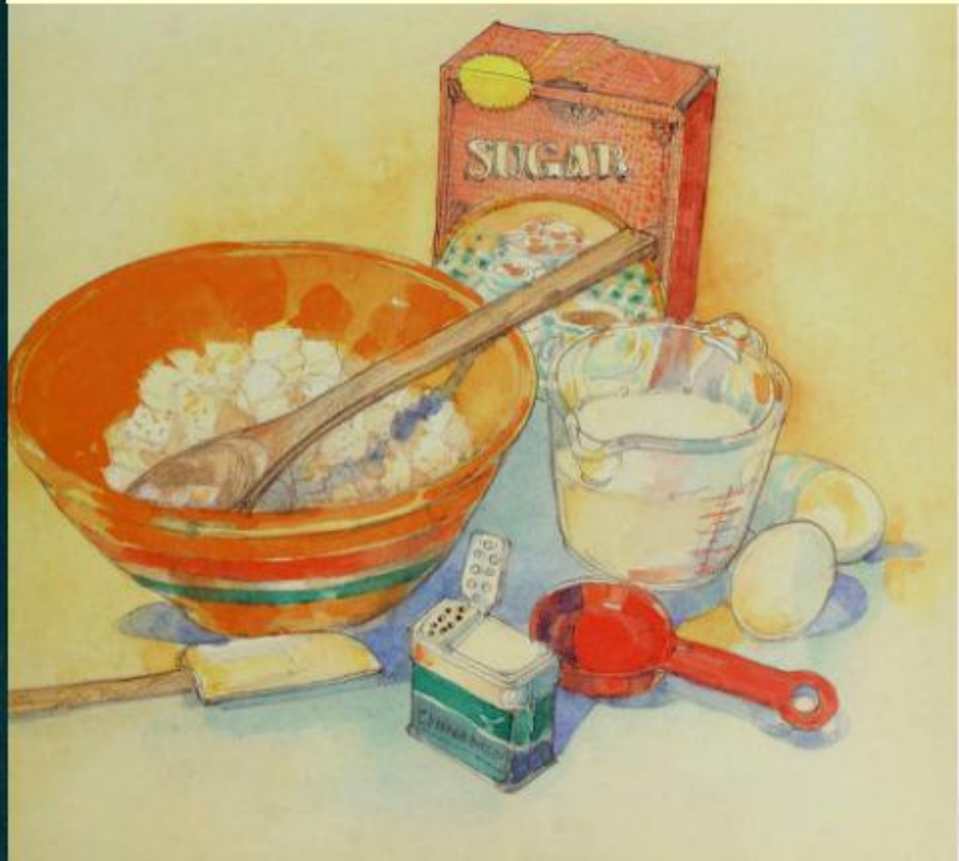
‘नानी-माँ की रज़ाई’ की उत्तर-कथा

विर्जिनिया के जिस फार्म में उसकी नानी-माँ बड़ी हुई थीं, तान्या वहाँ जाने को बहुत उत्सुक है. शीघ्र आयोजित होने वाले परिवार के पुनर्मिलन समारोह की तैयारी करने में उसे खूब मज़ा आयेगा-पुस्तकों और पत्रिकाओं में छपी तस्वीरें देखकर उसे विश्वास है कि फार्म में देखने और करने को बहुत कुछ होगा.

लेकिन आरंभ में उस पुराने फार्म में उसे ऐसा कुछ नहीं दिखा जो उसकी आशा अनुरूप हो. लेकिन फिर फार्म को देखने और समझने में नानी ने उसकी सहायता की. नानी को वह सब लोग स्मरण थे जिन्होंने वह फार्म बनाया था और उसे जोता था. फिर तान्या ने वह अद्भुत चीज़ें देखीं जो फार्म के हर कोने में छिपी थीं, और उसने एक ऐसी वस्तु भी खोज निकाली जिसने नानी को चौंका दिया.

‘नानी-माँ की रज़ाई’ के प्रिय पात्रों को लेकर लिखी यह कहानी दिल को छूने वाली है और हमें स्मरण कराती है कि जीवन की सबसे अच्छी कहानियाँ हमारे परिवार के इतिहास में ही होती हैं

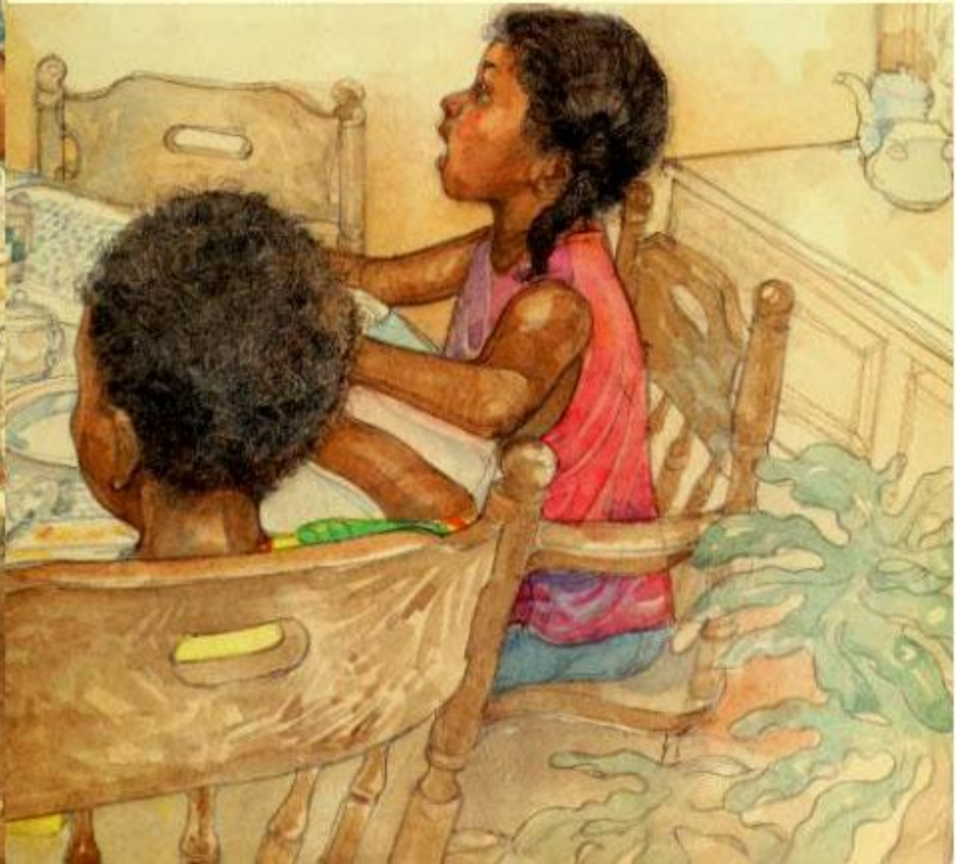
तान्या का पुनर्मिलन समारोह





शनिवार का दिन था. कुकीज़ बनाने का दिन. नानी का एक विशेष दिन. तान्या ने ब्रेड-पुडिंग का अंतिम निवाला मुँह में अभी डाला ही था कि नानी-माँ ने कहा, "जॉन मौसा और के मौसी का पत्र आया है. उन्होंने अनुरोध किया है कि पुनर्मिलन के लिए परिवार के अन्य सदस्यों के आने से पहले ही मैं फार्म पर आ जाऊँ. और मैंने जाने का निर्णय लिया है."

सब चुप हो गये. न तान्या और न ही उसके भाई, टैड और जिम, याद कर सके कि नानी-माँ परिवार के बिना अकेले कभी कहीं गई थीं.



"क्या हम सब पुनर्मिलन के लिए फार्म नहीं जा रहे?" तान्या ने पूछा. जब से उसने परिवार के पुनर्मिलन के बारे में सुना था तब से फार्म की अपनी पहली यात्रा और इस समारोह की वह उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी.

"हाँ, तान्या. हम भी जायेंगे," पापा ने उसे आश्वस्त किया.

"लड़कों का फुटबॉल कैंप समाप्त होते ही हम सब इकट्ठे फार्म जा सकते हैं," माँ ने पापा की ओर देखते हुए सुझाव दिया.

नानी-माँ ने आह भरते हुए कहा, "अब यह क्या झमेला है? मेरी छोटी बहन ने मुझे पहले आने के ले कहा है. मुझे लगता है कि उसे मेरी सहायता चाहिए. जितने लोग आ रहे हैं उनके रहने और सोने का प्रबंध करने में उसे शायद मेरी मदद चाहिए."

तान्या को याद आया कि माँ और नानी-माँ आपस में बातें करते हुए तय कर रही थीं कि वह सारी वस्तुएं जो कभी घर का...फार्म का... हिस्सा थीं और उन्हें वह परिवार के पुनर्मिलन के लिए फार्म वापस ले जाना चाहती थीं.

"लेकिन, माँ," तान्या की माँ ने कहा, "अभी थोड़े दिन पहले ही तो तुम बीमार थी. क्या तुम्हें लगता है कि यह यात्रा करना उचित होगा?"

तान्या ने देखा कि नानी-माँ ने हाथ बढ़ा कर माँ के हाथ को छुआ.



"वह तब की बात थी, प्रिय, और यह आज की बात है. मैं स्वस्थ हूँ. जब तक मैं समर्थ हूँ मैं वहाँ जाऊँगी," नानी-माँ ने दृढ़ता से कहा. "और अगर तुम्हें इतनी चिंता हो रही है तो मेरा ध्यान रखने के लिए तान्या को मेरे साथ भेज दो."

नानी-माँ के साथ यात्रा! सिर्फ वह दोनों. तान्या को अपने कानों पर विश्वास न हुआ.

"क्या मैं नानी-माँ के साथ जाऊँ?" उसने उत्तेजित होकर माँ से निवेदन किया.

माँ ने तान्या को देखा, फिर पापा को और फिर नानी-माँ को.

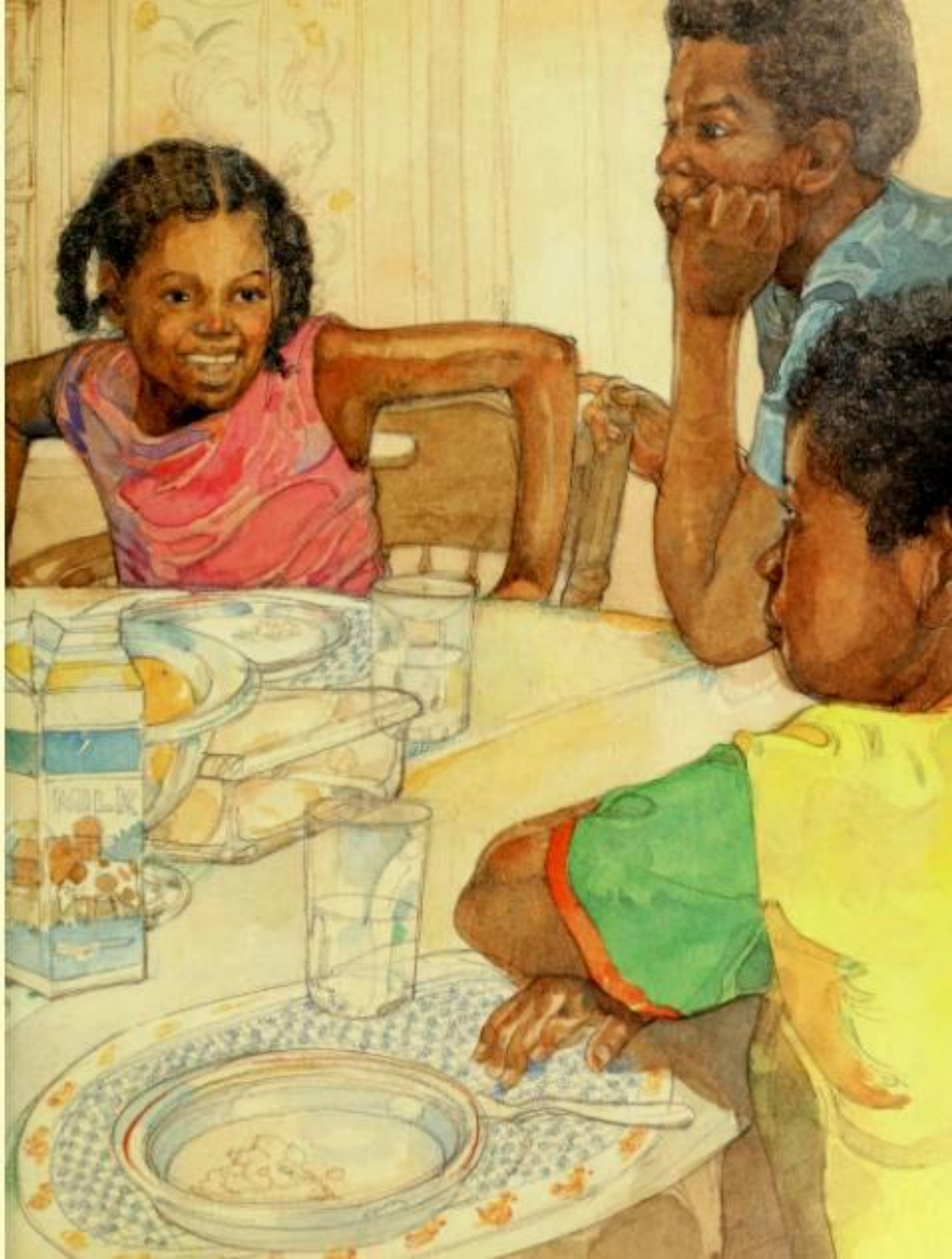
"टैड और जिम फुटबॉल कैंप जा रहे हैं," पापा ने प्यार से माँ को याद दिलाया. "और शीघ्र ही हम भी उनके पास जायेंगे."

नानी-माँ ने अपने एप्रन की जेब से एक पत्र निकाला. "मुझे लगता है कि के मौसी ने लिखा था कि उसके कुछ नाती-पोते पहले ही पहुँच जायेंगे. तो तान्या के साथ खेलने के लिए कुछ बच्चे वहाँ होंगे."

माँ ने नानी-माँ को देखा, फिर पापा को और फिर तान्या को. "ठीक है," आखिरकार वह मान गई. "तुम नानी-माँ के साथ जा सकती हो."

टैड और जिम के आश्चर्यचकित चेहरों को देख कर तान्या अपनी प्रसन्नता छिपा न पाई.

"उस पुराने फार्म पर हम ने कई अद्भुत दिन बिताये थे," नानी-माँ ने प्रसन्नता से कहा. "और तान्या भी बितायेगी. तुम देखना."



सूर्य आकाश में धीरे-धीरे क्षितिज के ऊपर आ रहा था, तान्या ने देखा कि उसकी जानी-पहचानी जगहें लुप्त हो रही थी. स्कूल पीछे रह गया, फिर पार्क. घरों की एक-एक कतार और चौराहों पर लगी यातायात-बत्तियाँ भी पीछे छूट गईं.

और तभी भी वह यात्रा करते रहे. वह सिर्फ बस बदलने के लिए रुके. नानी-माँ 'अपने घर लौटने' की बात कर रही थीं, उस महान प्रदेश विर्जिनिया में जहाँ 'संयुक्त राज्य अमरीका के पहले पाँच राष्ट्रपतियों में से चार ने जन्म लिया था'. तान्या चुपचाप उनकी बातें सुनती रही.





और तभी भी वह यात्रा करते रहे, जब तक कि उजला, सुंदर आकाश धूमिल और मटमैला नहीं हो गया और बड़ी सड़क कभी न समाप्त होने वाली कच्ची-सड़क में बदल गई. वो कच्ची-सड़क, खेतों और पेड़ों के बीच में से गुज़रती हुई, नीचे घाटियों में लुप्त होती दिखाई पड़ती थी. तान्या के लिए आँखें खुली रखना कठिन हो रहा था.

और तभी भी वह यात्रा करते रहे....जब तक कि आखिरकार बस धीरे होकर रुक नहीं गई.

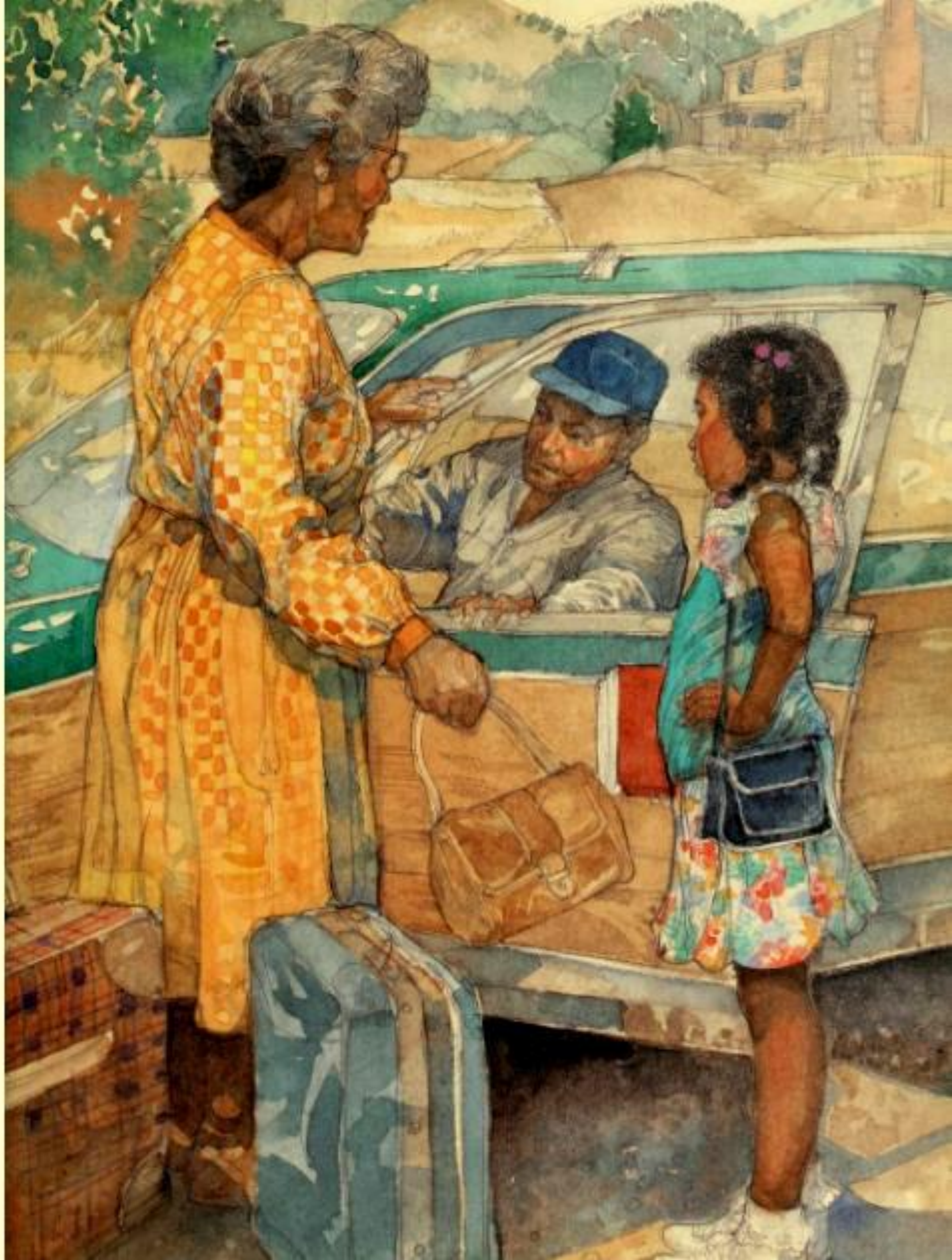
नानी-माँ ने तान्या को हौले से झकझोरा, “हम पहुँच गए, तान्या, उठ जाओ.” तान्या आँखें मल कर नींद से जागी. “हम घर पहुँच गए.”

बस की अंतिम सीढ़ी पर खड़े होकर तान्या ने एक कार देखी जो धूल उड़ाती हुई उनकी ओर आ रही थी. दूर एक फार्म-हाउस और खलिहान दिखाई दे रहे थे.

“मैं पिछले आठ...नौ घंटों से बस में बैठी हुई थी,” नानी-माँ ने जॉन मौसा को कहा, जो उन्हें लेने आए हुए थे. “मुझे लगता है कि बाकी का रास्ता मैं अपने बूढ़े शरीर को चल कर ही पार करने दूंगी.”

तान्या ने नानी-माँ को उस जाने-पहचाने रास्ते धीरे पर दृढ़ता से चलते देखा.

“स्मृतियाँ इतनी जल्दी नहीं मिटतीं,” जॉन मौसा ने धीमे से तान्या से कहा.



तान्या समझ न पाई की जॉन मौसा की बात का अर्थ क्या था. वह तो बस इतना जानती थी कि अगर नानी-माँ पैदल चल कर जाने वाली थीं तो उसे भी चल कर जाना पड़ेगा. और वह दौड़ कर नानी-माँ के पास आ गई.

“ध्यान रखो, प्रिय,” नानी-माँ ने कहा. “यहाँ अगस्त के मौसम में दौड़ने के बजाय आराम से चलना ठीक होता है.”

तान्या ने देखा कि नानी-माँ अन्यमनस्क भाव से कहीं दूर देख रही थीं. लेकिन जो कुछ तान्या ने वहाँ देखा वह सब वैसा न था जैसा उसने पुस्तकों और पत्रिकाओं की तस्वीरों में देखा था या जैसी कल्पना उसने अपने मन में कर रखी थी.



वहाँ कोई घोड़ा दिखाई न दे रहा था और फार्म-हाउस अपने मौलिक रुप की एक धुंधली स्मृति भर था. तान्या ने देखा कि उसके टखनों के पास धूल उड़ रही थी, जिससे उसकी सफेद जुराबें और जूते मैले भूरे रंग के हो गए थे

"अपने हृदय के द्वार खोल दो," नानी-माँ ने कहा. "क्या तुम्हें नहीं लगता कि यह जगह हमारा स्वागत कर रही है?"

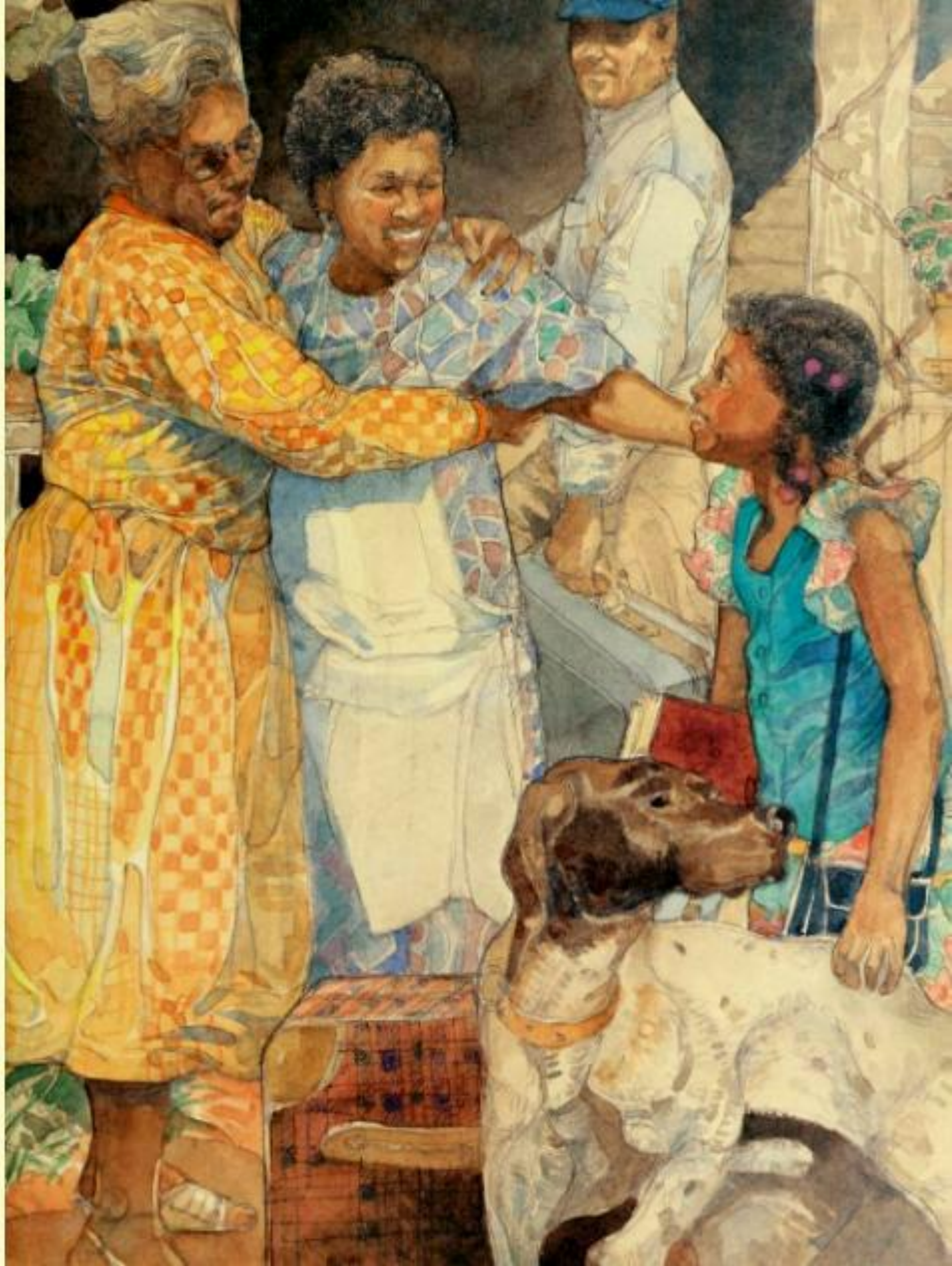
तान्या ऐसा कुछ भी अनुभव न कर रही थी, वह तो बहुत ही निराश और थकी हुई थी. फार्म उसकी आशा के अनुरूप न था. हाँ, सच में फार्म वैसा बिलकुल न था जैसा उसने सोचा था.

एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुन, तान्या फिर से फार्म-हाउस को देखने लगी. एक बड़ा कुत्ता साथ लिए, नानी-माँ की छोटी बहन, के, बरामदे से नीचे उतर कर आगे आई.

"मैं तुम्हें पैदल आते देख रही थी, रोज़ बुक्नैन," के मौसी ने कहा और फिर नानी-माँ का गले लगा लिया.

"हाँ, गर्मियों के ऐसे दिनों में अहसास होता था कि जैसे समय ज़रा रुक सा जाता था," नानी-माँ ने मौसी की बात पूरी करते हुए कहा.

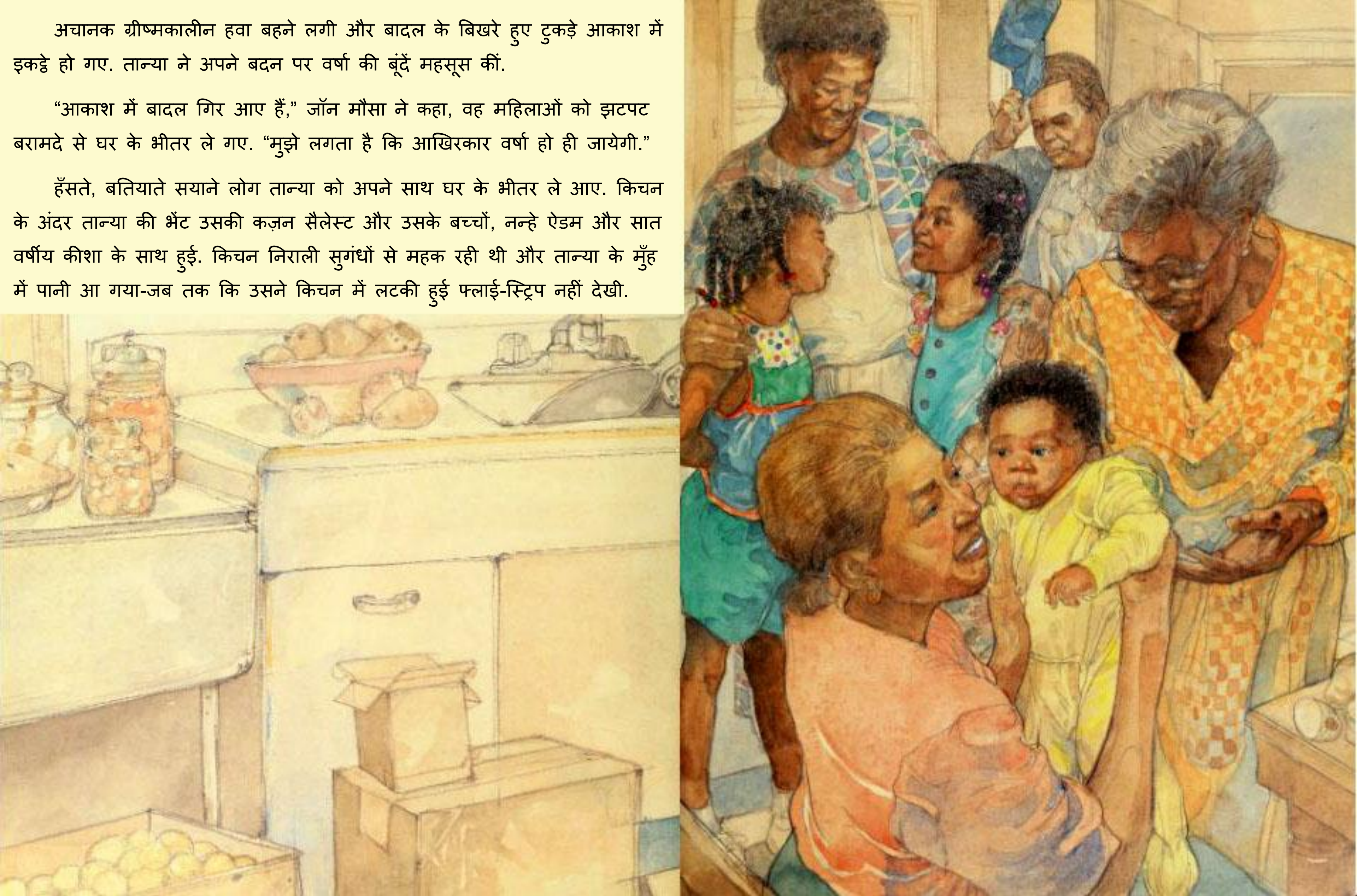
के मौसी तान्या की ओर घूमी और बड़े उत्साह और प्यार से उसे गले लगाया, वैसे ही जैसे नानी-माँ गले लगाती थीं.



अचानक ग्रीष्मकालीन हवा बहने लगी और बादल के बिखरे हुए टुकड़े आकाश में इकट्ठे हो गए. तान्या ने अपने बदन पर वर्षा की बूंदें महसूस कीं.

“आकाश में बादल गिर आए हैं,” जॉन मौसा ने कहा, वह महिलाओं को झटपट बरामदे से घर के भीतर ले गए. “मुझे लगता है कि आखिरकार वर्षा हो ही जायेगी.”

हँसते, बतियाते सयाने लोग तान्या को अपने साथ घर के भीतर ले आए. किचन के अंदर तान्या की भेंट उसकी कज़न सैलेस्ट और उसके बच्चों, नन्हे ऐडम और सात वर्षीय कीशा के साथ हुई. किचन निराली सुगंधों से महक रही थी और तान्या के मुँह में पानी आ गया-जब तक कि उसने किचन में लटकी हुई फ्लाई-स्ट्रिप नहीं देखी.



उस रात जब तान्या सोने के लिए अपने बिस्तर में गई तो वह बहुत दुःखी थी. जब तक जॉन मौसा ने ऊपर लटकी फ्लाई-स्ट्रिप हटा नहीं दी थी तब तक उसने खाने को हाथ भी न लगाया था. उसे अपने कमरे की याद आ रही थी. उसे माता-पिता की कमी खल रही थी, टैड और जिम की भी. कज़न कीशा और नन्हा ऐडम अच्छे थे. लेकिन साथ खेलने के लिए ऐडम बहुत छोटा था और कीशा ने सारी रात अपनी माँ से दूर रहने से मना कर दिया था.

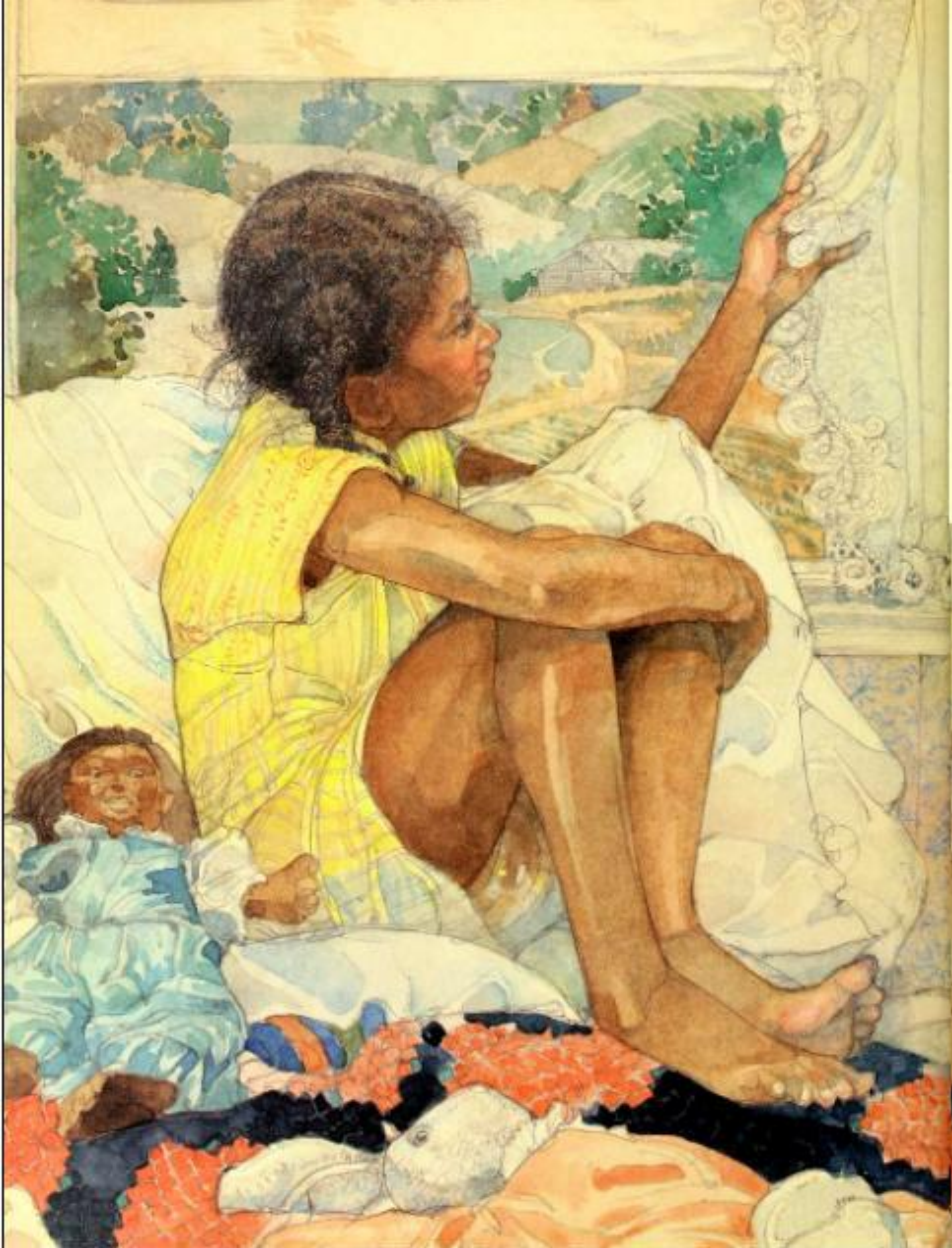


बच्चों को सुलाने में नानी-माँ ने के मौसी की सहायता की. "उन अद्भुत दिनों का क्या हुआ जो हम यहाँ बिताने वाले थे, नानी-माँ," तान्या ने फुसफुसाकर कहा.

"मुझे तो लगता है कि हमारा पहला दिन ही अद्भुत था," नानी-माँ ने कहा. "यहाँ वर्षा की आवश्यकता थी और आखिरकार वर्षा हो गई. इसी बात से आज का दिन अद्भुत बन गया, क्या तुम्हें नहीं लगता?"

तान्या ने आह भरी. "मैं घर जाना चाहती हूँ," उसने सिरहाने से बुदबुदा कर कहा.





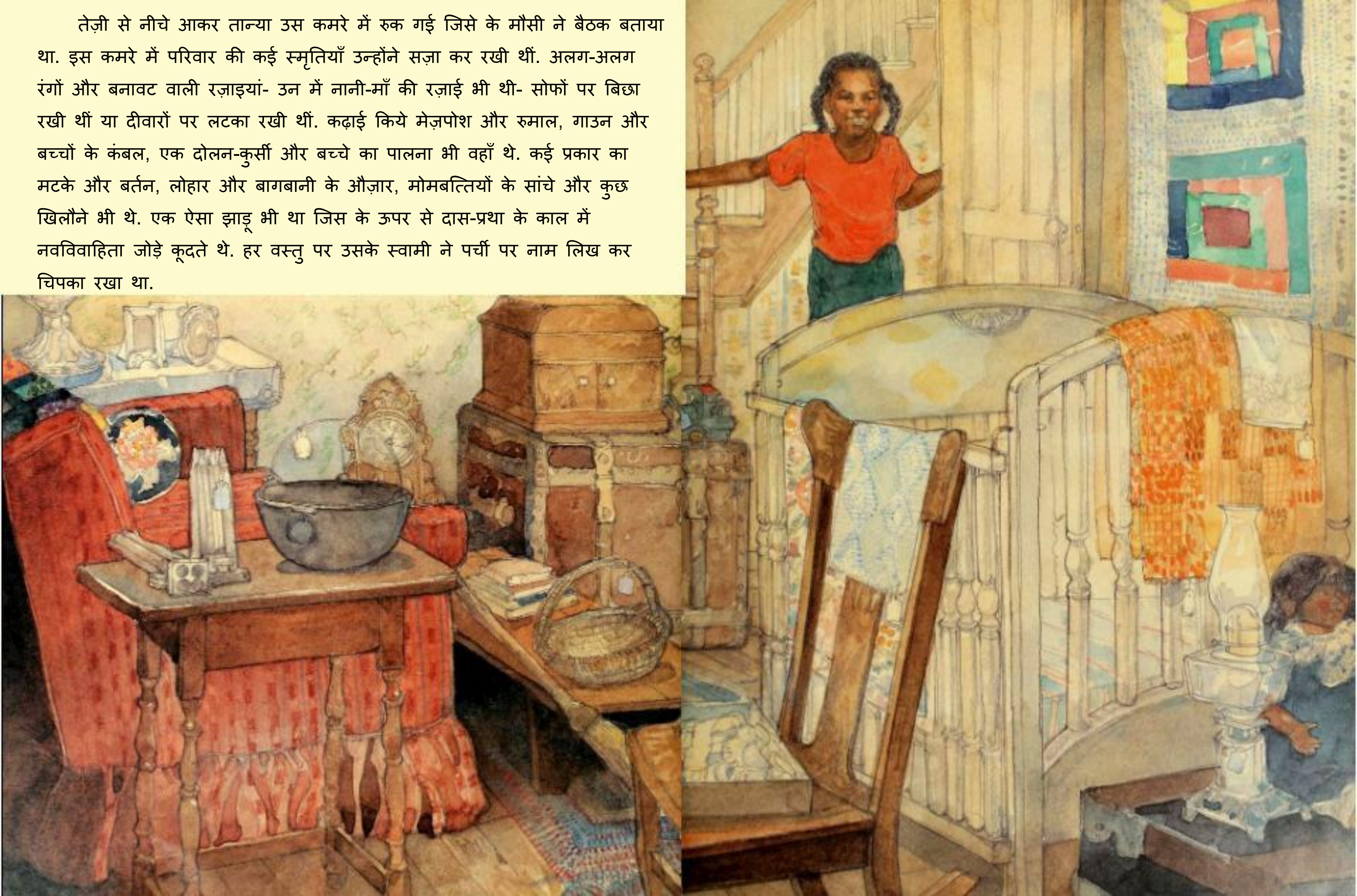
कुकड़ू-कूँ! मुर्गे की ऊँची बाँग ने कज़न कीशा को चौंका कर गहरी नींद से जगा दिया. वह रोने लगी और तब तक रोती रही जब तक कि उसकी माँ नन्हे शिशु के साथ उसे अपने कमरे में नहीं ले गई.

खिड़की के पास लगे अपने बिस्तर से तान्या ने बाहर खाली फार्म को देखा. आकाश मटमैला था, लेकिन हवा स्वच्छ और निर्मल थी और खिड़की से होते हुए धीरे-धीरे बह रही थी. शनिवार का दिन था. कुकीज़ बनाने का दिन, दुबारा नींद में जाने से पहले यह बात तान्या को याद आई.

वर्षा की एक बूंद तान्या के चेहरे पर गिरी... फिर दूसरी...और फिर एक और जब तक कि उसने नींद से जाग कर खिड़की बंद नहीं कर ली. उसके पूरी तरह तैयार होने तक बारिश इतनी मूसलाधार हो गई थी कि लग रहा था कि छत पर ढोल बज रहे थे.



तेज़ी से नीचे आकर तान्या उस कमरे में रुक गई जिसे के मौसी ने बैठक बताया था. इस कमरे में परिवार की कई स्मृतियाँ उन्होंने सज़ा कर रखी थीं. अलग-अलग रंगों और बनावट वाली रज़ाइयां- उन में नानी-माँ की रज़ाई भी थी- सोफों पर बिछा रखी थीं या दीवारों पर लटका रखी थीं. कढ़ाई किये मेज़पोश और रुमाल, गाउन और बच्चों के कंबल, एक दोलन-कुर्सी और बच्चे का पालना भी वहाँ थे. कई प्रकार का मटके और बर्तन, लोहार और बागबानी के औज़ार, मोमबत्तियों के सांचे और कुछ खिलौने भी थे. एक ऐसा झाड़ू भी था जिस के ऊपर से दास-प्रथा के काल में नवविवाहिता जोड़े कूदते थे. हर वस्तु पर उसके स्वामी ने पर्ची पर नाम लिख कर चिपका रखा था.



“अहा! उत्तर से आई मेरी भतीजी यहाँ पर है. क्या नाश्ते के लिए तैयार हो?” जॉन मौसा ने पूछा.

“हाँ! तैयार हूँ!” तान्या ने दरवाज़े पर घूमते हुए कहा.

नाश्ते के समय भी वर्षा होती रही. सैलेस्ट के साथ चैकर्स खेलते समय भी वर्षा होती रही. जॉन मौसा और कीशा के साथ डौमिनोज़ खेलते समय भी वर्षा होती रही. ऐडम के रोने और लुका-छिप्पी खेलते हुए जब तान्या ने अपने को अच्छे से छिपा लिया था तब कीशा की झल्लाहट के समय भी वर्षा होती रही.

“नानी-माँ,” तान्या ने आखिरकार पुकारा. “नानी-माँ, आप कहाँ हो?”

“यहाँ भीतर,” नानी-माँ ने उत्तर दिया.

तान्या को नानी-माँ किचन के अंदर मिलीं. के मौसी, कज़न सैलेस्ट भी वहाँ थे. वह डिब्बों से घिरे थे. उनके पास सूचियाँ थीं कि कौन कहाँ सोयेगा और परिवार के पुनर्मिलन पर कौन क्या पकायेगा.

“नानी-माँ, क्या आज हम कुकीज़ नहीं बनायेंगे?” तान्या ने पूछा.

नानी-माँ ने सूची से दृष्टि हटा कर उसकी ओर देखा. “अरे, अरे,” वह बुदबुदाईं.





तान्या ने अप्रसन्नतापूर्वक आह भरी. नानी-माँ ने अपनी नाती के कंधे पर अपनी बाँह रखी और उसे पिछले दरवाज़े से बाहर ले आईं. लगातार तेज़ वर्षा हो रही थी और ऐसा लगता था कि बरामदे और बाहर अहाते के बीच पानी का एक पर्दा सा लटका था.

नानी-माँ ने झूले पर बैठ कर झूले को थपथपा कर संकेत किया. तान्या नानी-माँ के साथ चिपक कर बैठ गई.

"मुझे खेद है, प्रिय तान्या. मैं भूल ही गई कि आज कौन सा दिन है," नानी-माँ ने गहरी साँस ली और फिर हँस दीं. "और मुझे लगता है कि इस जगह को मेरी दृष्टि से देखने के लिए यहाँ की अनगिनत कहानियाँ भी तुम्हें प्रोत्साहित न कर पायेंगी."

"क्या यहाँ रहना आपको सच में अच्छा लगता था, नानी-माँ?" तान्या ने पूछा. "क्या आपको यहाँ कभी अकेलापन महसूस नहीं होता था?"

नानी-माँ फिर से हँस दीं. "नहीं, तान्या, यहाँ मैं कभी अकेली न थी. उन दिनों, यह सारा फार्म, खलिहान, चरागाह, खेत, दूर वह बाग़"-उन्होंने अपनी बाँह फैलाई-"यह सारी जगह गतिविधि से भरी रहती थी. हम धरती के थे और धरती हमारी थी. हम इस पर काम करते थे, इसे जोतते थे, बीज बोते थे, फसल तैयार होने पर उसे काटते थे. धरती हमें पानी, खाना, कपड़े और आश्रय देती थी."



“नानी-माँ, अगर आप यहाँ अकेली न थीं तो आपने यह जगह क्यों छोड़ी?” तान्या अपनी बात पर अड़ी रही.

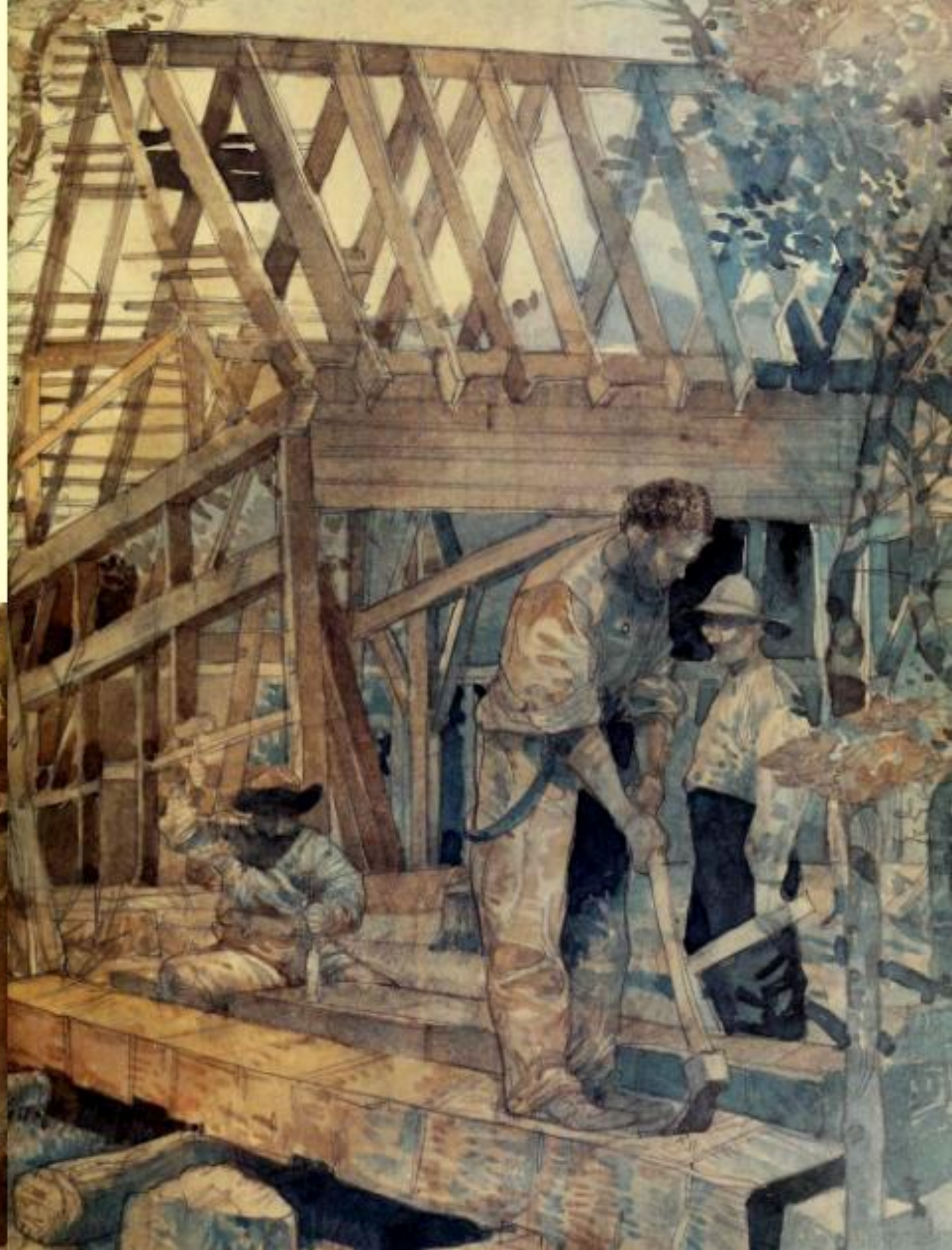
ज़मीन को दूर तक देखते हुए नानी-माँ याद करने लगी, “दूसरे विश्व युद्ध के बाद की बात है. मेरे ईसाक-तुम्हारे नाना फ्रैंक्लिन- और कई अन्य लोगों को लगा कि उत्तर के नगरों में उन्हें बेहतर अवसर मिल सकते थे, अच्छी नौकरियाँ मिल सकती थीं. और हमें बेहतर अवसर मिले. लेकिन हमने ज़मीन को अपने पास ही रखा और हम इसका टैक्स भरते रहे. कभी-कभी खेती करने के लिए हम यह ज़मीन किराये पर दे देते थे, जब तक कि जॉन और के यहाँ वापस नहीं आ गए. लेकिन यह फार्म सदा हमारा घर रहेगा.”

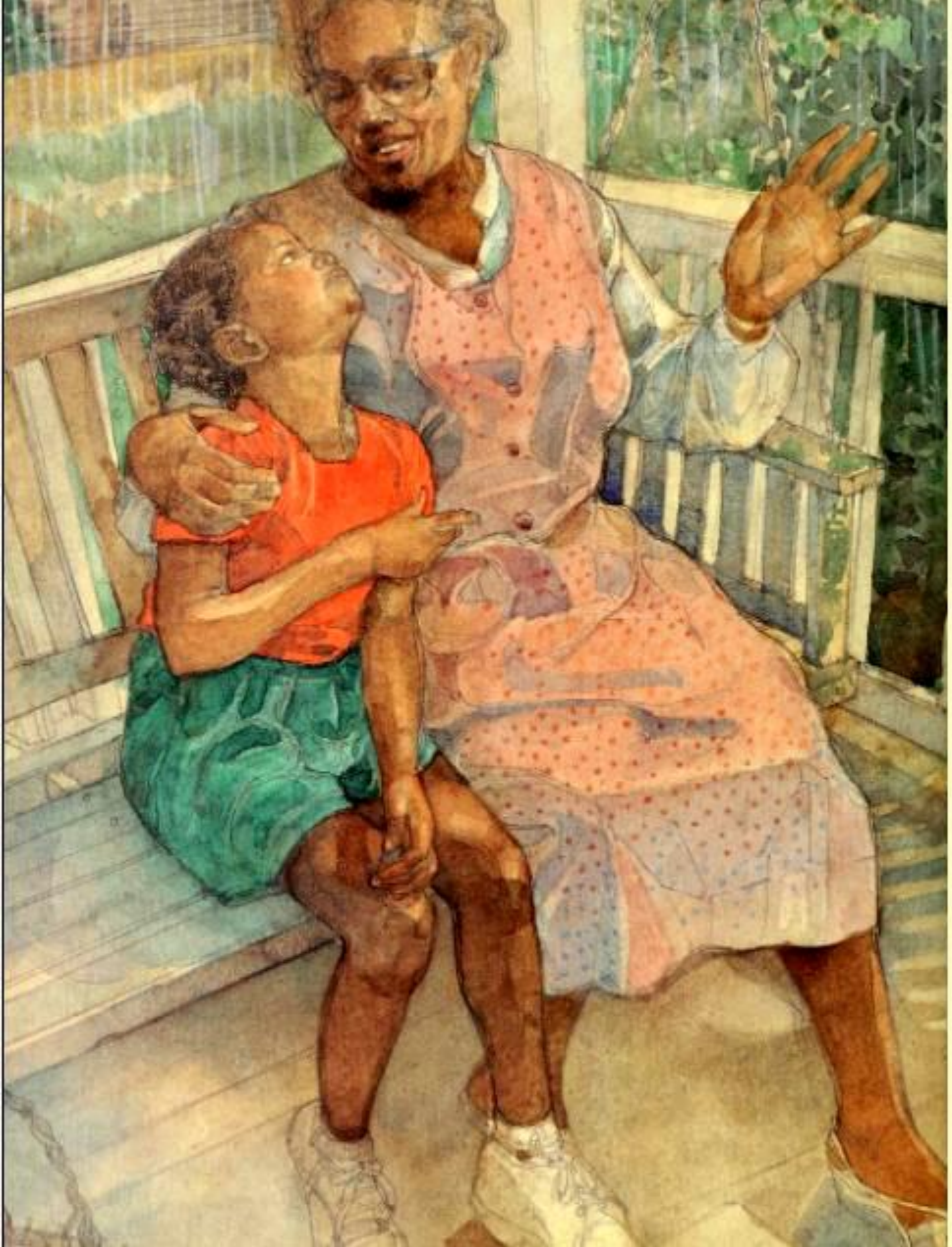
तान्या और नानी-माँ, बारिश में भीगी ज़मीन को देखते हुए, धीरे-धीरे झूला झूलती रहीं.

“नानी-माँ, जब आप दूर देखती हैं-वहाँ बहुत दूर-तो आप क्या देखती हैं?”

नानी-माँ की आँखें चमकने लगीं. “मैं तुम्हारे मौसा और मौसियों और मौसेरे बहन, भाइयों को देख रही हूँ जो इस फार्म में रहते थे. मैं अपने पिता के पिता और उनकी इंडियन पत्नी को देख रही हूँ. बहुत वर्षों पहले उन्होंने यह फार्म बनाया था.”







"और क्या आप नाना को देख पा रही हैं?" तान्या ने धीरे से पूछा.

"अरे, हाँ, तान्या. तुम्हारे नाना सदा मेरे साथ होते हैं. लेकिन इस फार्म में तो वह 'बहुत निकट' होते हैं," नानी-माँ ने कहा.

वर्षा थमने लगी. नानी-माँ ने तान्या का कंधा हौले से दबाया. "अब तुम, कीशा और ऐडम इस फार्म का भाग हो, बच्ची," उन्होंने कहा. "परिवारों के इतने बड़े समारोह बिना तैयारी और योजना के आयोजित नहीं किये जा सकते. हर व्यक्ति योगदान देता है और समारोह को सफल बनाने का पूरा प्रयास करता है."

जब नानी-माँ और तान्या किचन में वापस लौटे तो वहाँ हंगामा मचा हुआ था. ऐडम ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था. फोन की घंटी बज रही थी और दरवाज़े पर एक सामान पहुँचाने वाला आया हुआ था. के मौसी अपना हैंडबैग ढूँढ़ रही थीं.

नानी-माँ हँस दी. "लगता है यहाँ हमारी आवश्यकता है."

कज़म सैलेस्ट ने ऐडम को उठा लिया और नानी-माँ दरवाज़े पर खड़े व्यक्ति से सामान लेने लगीं. तान्या ने फोन पर उत्तर दिया और कीशा की सहायता से डायपर का खोया हुआ डिब्बा ढूँढ़ निकाला. जब के मौसी अपने हैंडबैग के साथ वापस आई, तब सब शांत हो गया था.

“के मौसी, क्या कीशा और मैं जॉन मौसा से मिलने खलिहान जायें?” तान्या ने पूछा.

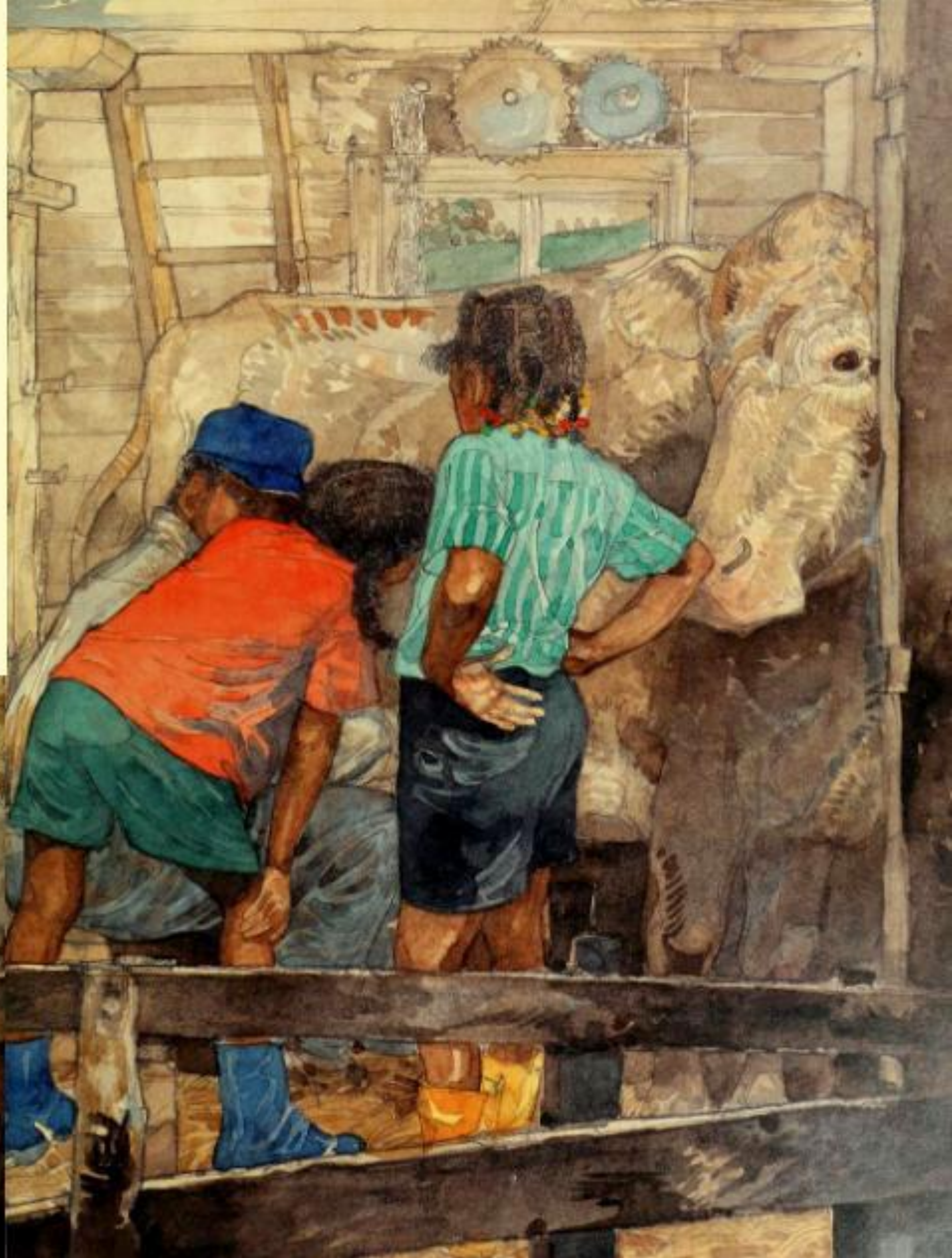
“मुझे विश्वास है कि उन्हें तुम्हारा संग अच्छा लगेगा,” के मौसी ने कहा. “बस जाने से पहले यह पुराने जूते पहन लो.”

तान्या और कीशा ने जूते पहन लिए और खलिहान की ओर चल दीं. लड़कियों ने जॉन मौसा को गायों का दूध निकालते देखा. फिर जॉन मौसा की अनुमति से उन्होंने मुर्गियों का चारा ज़मीन पर बिखेर दिया. मुर्गियाँ जब दाने खा रही थीं तब उसने और कीशा ने अँडे इकट्ठे कर लिये. उसके बाद लड़कियाँ खलिहान की छानबीन करने लगीं और जब वह थक गईं तो आराम करने के लिए वह अटारी पर चढ़ गईं.

जब तीनों खलिहान से वापस चले तब सूर्य चमकीला और गर्म था. “यहाँ का मौसम बहुत ही अनोखा है,” जॉन मौसा ने कहा.

“जॉन!” नानी-माँ ने खिड़की से पुकारा. “हमें कुछ सेब चाहियें.”

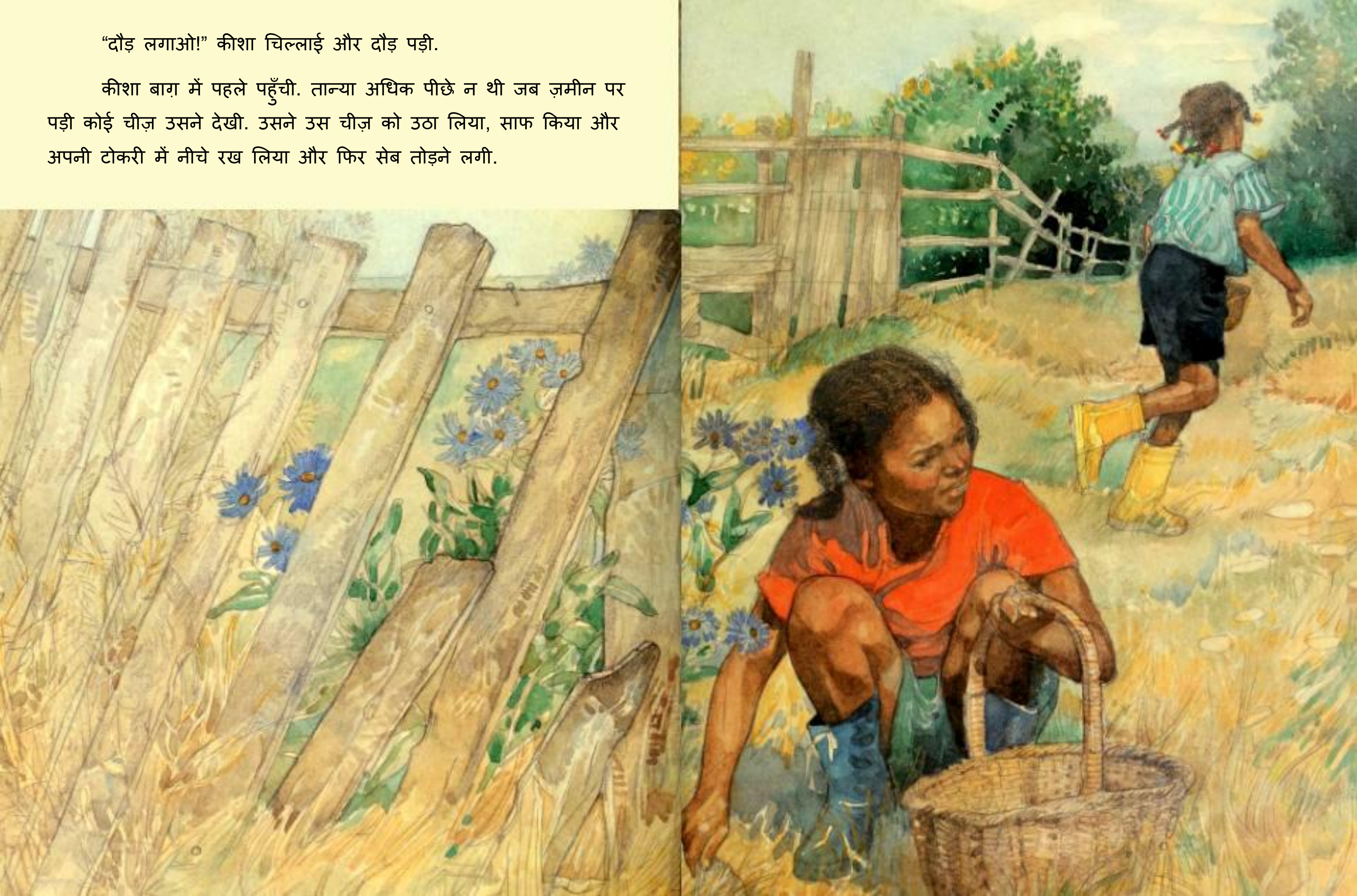
जॉन मौसा ने लड़कियों को एक-एक टोकरी दी और फलों के बाग़ की ओर संकेत किया.





“दौड़ लगाओ!” कीशा चिल्लाई और दौड़ पड़ी.

कीशा बाग़ में पहले पहुँची. तान्या अधिक पीछे न थी जब ज़मीन पर पड़ी कोई चीज़ उसने देखी. उसने उस चीज़ को उठा लिया, साफ किया और अपनी टोकरी में नीचे रख लिया और फिर सेब तोड़ने लगी.



दिन बीता, सांझ हो गई और परिवार के सब लोग रात का खाना खाने के लिए बैठ गए. खाने के बाद मीठे में घर में बनाई ऐप्पल पाई थी जिस पर घर की बनी आइस-क्रीम लगी थी-तान्या ने कीशा को सिखाया था कि पपड़ी बनाने के लिए गूंथे हुए आटे को कैसे लपेटा जाता है.

पाई का आखिरी निवाला खाने के बाद ही तान्या ने वह चीज़ सबको दिखाई जो उसे दुपहर में मिली थी: यह उस बाड़ का एक टुकड़ा था जो कभी बाग़ को खेत से अलग करता थी. उस लकड़ी के टुकड़े पर आद्यक्षर खुदे थे:

आर. बी.

+

आइ. ई

रोज़ बुक्नैन और ईसाक फ्रैंक्लिन.

"यह आपका इतिहास है, है न नानी-माँ? आपका और नाना का."

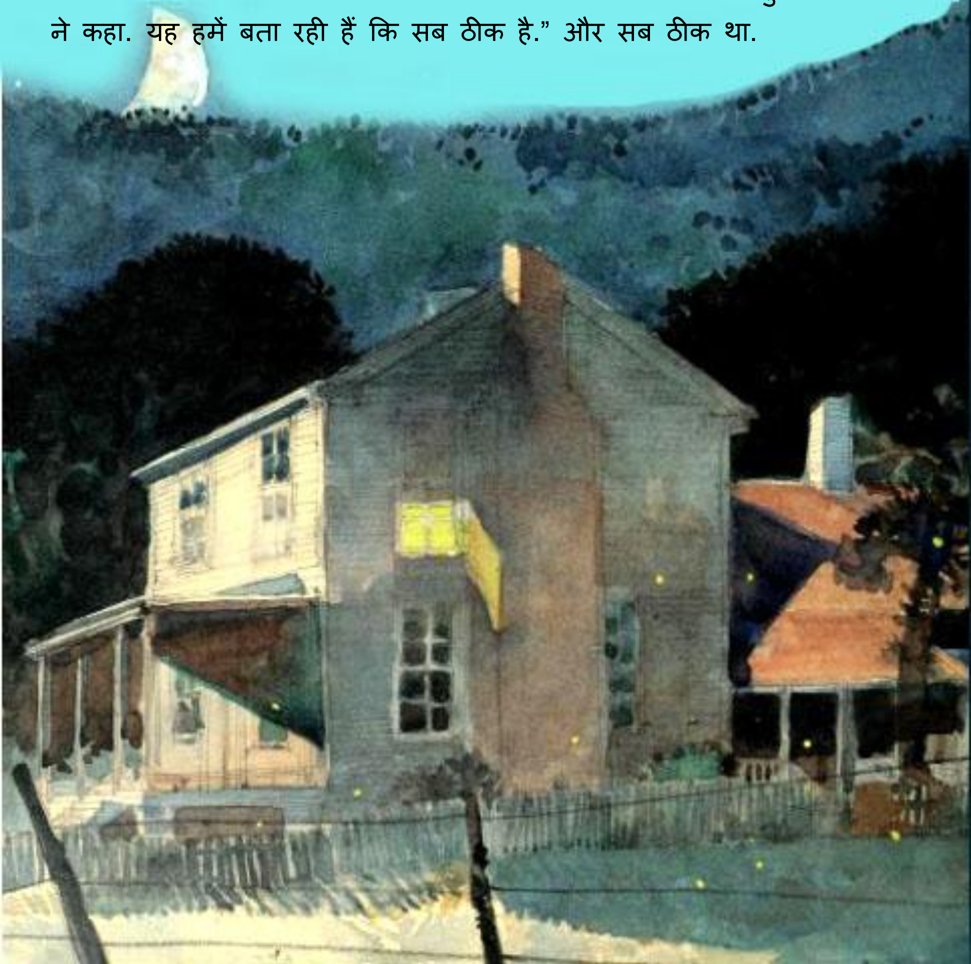
"ओह हाँ, मेरी बच्ची. तुम्हारे नाना और मेरी एक विशेष स्मृति," आनंदमग्न नानी-माँ ने कहा. "हर कोई इसे देख पाए इसलिए हम इसे बैठक में रख देंगे.



उस रात जॉन मौसा ने बरामदे में स्लीपिंग बैग रख दिये ताकि तान्या और कीशा कल्पना कर सकें कि वह बाहर किसी कैंप में रुकी हुई थीं. तान्या ने इतने जुगनू कभी न देखे थे और न ही इतने झींगुरों की आवाज़ सुनी थी.

"क्या फार्म कभी शांत नहीं होता?" तान्या ने नानी-माँ से पूछा, जो निकट ही दोलन-कुर्सी पर बैठी झूल रही थीं.

"यह रात की ध्वनियाँ हैं, प्रिय," गर्म, नम हवा में साँस लेते हुए नानी-माँ ने कहा. यह हमें बता रही हैं कि सब ठीक है." और सब ठीक था.



समाप्त